सत्यमेव जयते

श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्बोधन

राष्ट्रीय सुरक्षा एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन

दिनांक 11 फरवरी, 2020 समय सांय 4.00 बजे

स्थान – धानक्या, जयपुर

भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओ और छायाकार मित्रो।

किसी भी राष्ट्र व राज्य के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय, राष्ट्र हित की सूची में सर्वोपरी व महत्वपूर्ण होता है। आम–आदमी के लिए तो राष्ट्रीय सुरक्षा ही राष्ट्र हित का पर्याय है, जिसका अर्थ वह देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा के द्वारा एकता और अखण्डता को निरापद रखना समझता है। राष्ट्रीय सुरक्षा की पारम्परिक परिभाषा इसे सैनिक और सामरिक आयाम तक ही सीमित रखती थी। इस सोच को पुष्ट करने का कारण यह रहा है कि एकता, अखण्डता और भौगोलिक सीमाओं को आक्रमणकारी उल्लंघन से मुक्त रखने में असमर्थ कोई भी राज्य अपने को सम्प्रभु नहीं मान सकता। यदि वह अपने अधिकार क्षेत्र में मानचित्र पर दर्शित उस भू–भाग पर जिसे राष्ट्र–राज्य के रूप में पहचाना जाता है, अपनी सत्ता को एक छत्र नहीं रख सकता तो उसे पराधीन ही समझा जाता है।

यह बात अक्सर अनदेखी रह जाती है कि आखिर महत्वपूर्ण समझी जानी वाली यह सैनिक और सामरिक सुरक्षा, आखिर क्यों इतनी महत्वपूर्ण है?

हकीकत यह है कि राष्ट्र–राज्य की सीमा के भीतर, घरेलू राजनीति में अपनी इच्छानुसार आर्थिक नीतियां लागू करने के लिए, राजनीतिक प्रणाली चुनने के लिए और सामाजिक संगठन को सुव्यवस्थित रखने के लिए जिस स्वायत्तता की दरकार होती है, उसी के लिए किसी भी भू–भाग विशेष में सम्प्रभु आधिपत्य आवश्यक है। इनके आर्थिक–सामाजिक तथा सांस्कृतिक राष्ट्रीय हितों की हिफाजत, सैनिक सामरिक सुरक्षा के माध्यम से करने का प्रयत्न, राष्ट्रहित समझा जाता है। यह बात दोहराने लायक है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के आर्थिक और सामाजिक पहलू सैनिक पक्ष से कम महत्वपूर्ण नहीं समझे जा सकते।

कुछ विद्वानों का मानना है कि यह बात सामरिक शब्द में अंतर्निहित है। वाल्टर नामक विद्वान ने एक बड़ी

सारगर्भित टिप्पणी करते हुए यह बात स्पष्ट की है कि एक राष्ट्र को तभी तक सुरक्षित समझा जा सकता है जब तक उसे अपने आधारभूत मूल्यों की कुर्बानी के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।

इन मूल्यों को, जो उसके अस्तित्व के साथ जुड़े हैं, और उसकी राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा है, चुनौती दिए जाने पर उसमें यह सामर्थ्य होनी चाहिए कि युद्ध को नकारने की स्थिती में, इनमें किसी तरह की समझौते की जरूरत न पड़े और युद्ध की स्थिती में (इनकी रक्षा हेतु) उसकी विजय सुनिश्चित हो। राष्ट्रीय सुरक्षा का यह अमूर्त पक्ष सबसे कम समझा जाता है, और सम्भवतः यही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

देश में हाल–फिलहाल जिस तरह चहुं ओर राष्ट्रभक्ति उफान पर है, देशद्रोह (असल में राजद्रोह) के आरोप–प्रत्यारोप लगाकर लोगों को घेरे में बंद किया जा रहा है, वैसे में ठहरकर सबसे पहले राष्ट्र की अवधारणा को

ही समझ लेना क्या ठीक नहीं होगा? आज भारत को अस्थिर और विघटित करने के लिए कई शक्तियां काम कर रहीं है। यदि हमने इस समस्या से निपटने के लिए उचित चिंतन मनन नहीं किया तो गंभीर खतरों का सामना करना पड़ सकता हैं। हमें इस समस्या से दुनियां को भी चेताना है जिससे कि भारत और विदेशों में काम करने वाली ब्रेक इंडिया फोर्सेस का एक स्थापित वर्गीकरण कर सके।

आज देश को तोड़ने वाली शक्तियां ज्यादा सक्रिय हैं। कोई जातिवाद के नाम पर, कोई संप्रदाय के नाम पर और कोई "भारत तेरे टुकड़े होंगे" के नाम पर देश को तोड़ने के लिए सक्रिय है। हमें ऐसी शक्तियों को मुंहतोड़ जवाब देना है।

हमारी सभ्यता और संस्कृति हमें एक साझा पहचान देती है, एक साझा ऐतिहासिक विरासत और एक भविष्य देती है. हमें यह बोध देती है की हमारा देश और यह संस्कृति इस योग्य है जिसे बचाने के लिए संघर्ष किया जाये एक सभ्यता को तोड़ना एक व्यक्ति की रीढ की हड्डी

को तोड़ने जैसा है एक टूटी हुई सभ्यता टुकड़े–टुकड़े होकर बिखर सकती है, और एक पूरे क्षेत्र को गहरे अंधकार में धकेल सकती है।

क्या भारतीय सभ्यता में इस तरह टूटने की प्रवृति है? और वो कौन सी शक्तियाँ हैं जो इसे तोड़ने का प्रयास कर रही हैं. वे बाहरी ताकतें हैं, या अंदरूनी? या दोनों? वे कहाँ उपजती हैं, कैसे बढ़ती हैं? उन्हें कौन चलाता है?

भारत को जोड़कर रखने वाली केंद्रीय शक्तियां कौन सी हैं? आर्थिक विकास, व्यापारिक और औद्योगिक विकास, और बेहतर लोकतान्त्रिक शासन इनके बारे में बहुत कुछ लिखा और कहा जा रहा है पर भारत को तोड़ने की शक्ति रखने वाली आन्तरिक और बाहरी विकेन्द्रीय शक्तियों के बारे में कम चर्चा हो रही है।

किन्तु देश को तोड़ने वाली बाहरी शक्तियाँ ज्यादा जटिल हैं. और वे हमारी आन्तरिक दरारों से एक समीकरण बना रही हैं. एक विश्वव्यापी तंत्र है जो इन आन्तरिक शक्तियों को नियंत्रित कर रहा है पाकिस्तान हमारे यहाँ

अव्यवस्था फैलाने वाला अकेला नहीं है चीन का माओवादियों से सम्बन्ध, या यूरोप और अमेरिका की धर्मान्तरण करने वाली ताकतें ही अलगाववाद नहीं फैला रही. यह सब तो है ही, पर इससे कहीं ज्यादा है। इन सभी विभाजनकारी शक्तियों का एक गहरा और जटिल अंतर्संबंध है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन

1. राष्ट्र देवो भवः–दीनदयाल जी ने कहा कि देश की एकता और अखंडता के प्रश्न पर कोई समझौता नहीं हो सकता। देश की एकता और अखंडता हमारी श्रद्धा का विषय है उसकी प्राप्ति के लिए हम कोई भी प्रयत्न करेंगे। उन्होंने राष्ट्र देवो भवः की बात कही हमारा राष्ट्र हमारे देवता के समान है। यह बात जब राष्ट्र के सभी नागरिक मानने लग जायेंगे तो देश की अधिकांश समस्याएं हल हो जायेंगी। राष्ट्रीय चुनोतियों के समाधान में कोई अड़चन किसी बात के लिए नहीं आएगी।

अगर बीच में कहीं थोड़ा संकट दिखाई देगा तब सब एक दूसरे के पूरक हो जाएंगे क्योंकि सबके सामने एक राष्ट्र का विचार रह जाएगा।

2. प्रतिरक्षा एक नित्य आवश्यकता

पंडित नेहरू और कम्युनिस्ट दीन दयालजी पर युद्ध पिपासु एवं प्रतिक्रियावादी की मोहर लगाकर अलग हो जाते थे किंतु दीनदयाल जी ने इन बातों की परवाह ही नहीं की और रक्षासिद्धता को बढ़ाने पर निरंतर बल दिया। तथापि सैनिक गुटों में सम्मिलित होकर उन गुटों की विदेश नीति को स्वीकारते हुए अपनी स्वावलंबी रक्षासिद्धता में शिथिलता लाना उन्हें शत्रु– मित्र संबंधों का विचार करने का आग्रह तो रखा किंतु प्रतिरक्षा को सदैव एक शाश्वत आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया।

चीन के आक्रमण के समय देश को प्रतिरक्षा का महत्व समझाने का काम दीनदयाल जी पर आ पड़ा। 1962 में चीन द्वारा आक्रमण किए जाने तक उन्हें इस संकट के बारे में बार–बार सचेत करना पड़ा। दीनदयाल जी ने दलाई

लामा का पक्ष लिया तो सभी तथा कथित प्रगतिशील लोगों ने दीनदयाल जी की खिल्ली उड़ाई कि यह भी कोई दलाई लामा है? यह तो मलाई लामा है। दीनदयाल जी इस खिल्ली और उपहास को पी गए। प्रतिरक्षा के लिए एड़ी चोटी का पसीना एक करने वाले वीर सावर कर जिस देश में रंगरूट वीर कहा गया, उस देश में जनसंघ को युद्ध पिपासु कहा जाना स्वाभाविक ही तो था। किंतु केवल राष्ट्रहित का ही विचार करने वाले दीनदयाल जी ने सस्ती लोकप्रियता या भुलावे में न डालने वाले नारे के झांसे में न आते हुए रक्षासिद्दता की मांग सतत की।

चीनी आक्रमण के बाद दीनदयालजी ने जनसंघ के द्वारा परमाणु बम बनाने की मांग की और घोषित किया कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए जो भी मूल्य चुकाना पड़े कम ही होगा। 1952 से 1962 तक 10 वर्षों में दीनदयालजी ने चीन के बारे में सदैव चेतावनी दी तथा कई बार प्रदर्शन किए। चीन ने जब देश पर बड़ा आक्रमण किया तो सामान्य जनता की समझ में उनके कार्य का महत्व भली–भांति आ गया।

1962 के चीनी आक्रमण के समय अमेरिका ने हमारी सहायता की पर रूस हाथ पर हाथ धर कर बैठा रहा। रक्त का संबंध अधिक निकट का होता है परन्तु उसके तीन मास बाद ही दीनदयाल जी ने भविष्यवाणी की। चीन की विस्तारवादी नीतियों का ठीक से विश्लेषण करेंगे तो न केवल एशिया के कुछ राष्ट्र अपितु कुछ कम्युनिस्ट देश भी चीन के विस्तार वाद का धिक्कार करेंगे और हमारे साथ हो लेंगे।

प्रतिरक्षा के लिए कितना खर्च करना पड़ेगा? इस प्रश्न का भी उत्तर यही है। प्रतिरक्षा के लिए जितना पर्याप्त हो, उतना व्यय करना चाहिए। धन कहां से लाया जाए? आज तक सुरक्षा–सामग्री के लिए जैसे संचित किया वैसी ही इसे भी करें। रक्षा का कोई विकल्प नहीं है। बातचीत, पंचशील, शांति प्रवचन आदि विकल्प घातक सिद्ध हो चुके हैं। अतः आज सच्ची आवश्यकता शस्त्रास्त्रो का भंडार, अनिवार्य सैनिक शिक्षा, जनता को संभावित युद्ध के लिए तैयार रहना

सिखाने वाली राजनीति और अपना पेट काटकर भी मातृभूमि की स्वतंत्रता को बनाए रखने की धुन में दिन–रात परिश्रम की है। यही चार सूत्र आज नितांत आवश्यक है।

3.रक्षासिद्धता के लिए जन आंदोलन

चीन के द्वारा परमाणु विस्फोट कर परमाणु अस्त्र–धारी देशों की मालिका में पदार्पण किया। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने जनसंघ द्वारा जनआंदोलन करवा कर एक विराट प्रदर्शन का आयोजन किया। देश के कोने कोने से लाखों प्रदर्शनकारी दिल्ली पहुंचे। देश में प्रतिरक्षा का और देश प्रेम का ज्वार सा आ गया, कौने कौने से लाखों प्रदर्शनकारी दिल्ली पहुंचे एक माह बाद ही पाकिस्तान से युद्ध छिड़ गया। इतिहास में प्रथम बार भारतीय सेना ने सामान्य जनता को यह प्रतीति कराई की बिना युद्ध स्वातंर्त्य किसे मिला है? बिना युद्ध स्वातंर्त्य कहां टीका है? वाली काव्य पंक्ति बिल्कुल सत्य है।

4.विदेश नीति एवं स्वदेश की रक्षा दोनों पूरक हैं

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने बताया की विदेश नीति एवं स्वदेश की रक्षा दोनों जुड़ी बातें होती हैं। अब राष्ट्रीय हितों की रक्षा तथा पोषण के निकषों पर ही इस नीति का निर्धारण करना चाहिए। विदेश नीति और स्वदेश रक्षा के बारे में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार शत–प्रतिशत राष्ट्रहित पर आधारित थे। वीर सावरकर, सुभाष चंद्र बोस तथा डॉक्टर मुंजे आदि राजनीतिक नेताओं के साथ ही उनके विचारों ने भी मार्गक्रमण किया था।

दीनदयाल जी ने इन्हीं विचारों को विदेश राजनीति और प्रतिरक्षा–कार्य में हथियार बनाया। शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्र शास्त्र चर्चा प्रवर्तते वाली उक्ति उन्हें पूर्णतः अनुकरणीय लगी। विदेश नीति पंडित नेहरू का विशेष विषय था इसलिए स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के निर्धारण में वे ही सर्वे सर्वा बन गए। बात केवल इतनी ही थी कि हमारी विदेश नीति निर्धारित करते समय उन्होंने अपने स्थान का उपयोग देश के हित के लिए नहीं किया। गांधीजी ने जिस प्रकार स्वराज्य का घोड़ा खिलाफत की गाड़ी में जोत दिया वैसे ही

पंडित नेहरू ने स्वतंत्र भारत के घोड़े को चीन के आक्रमण से जोत दिया। अपनी विदेश नीति का दिग्दर्शन कराते हुए कानपुर के 1952 के अधिवेशन में दीनदयाल जी ने कहा हमारी विदेश नीति का सूत्र होना चाहिए बिना किसी सत्ता गुट में उलझे अधिकाधिक मित्र जोड़ना। विश्व में शांति रही तो हमें भी अपने आर्थिक विकास की ओर ध्यान देने के लिए अधिक शांति मिलेगी।

भारत स्वभाव और एकाधिकारवाद का विरोधी रहा है। इसलिए भारत को चाहिए कि विश्व में लोकतंत्र और स्वतंत्रता का विकास होने का ही पक्षधर बने। उपनिवेशवाद से मुक्त होने वाले देशों के प्रति स्वाभाविक सहानुभूति दिखानी चाहिए।

इसके बाद इस नीति को अधिक स्पष्ट करते हुए उस अधिवेशन के प्रस्ताव में दीनदयाल जी ने कहा कि भारत को शांति के लिए प्रयास तो करना ही चाहिए, किंतु शांति प्रेम के निमित्त ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे देश की अवहेलना हो और उसे हानि उठानी पड़े।

5. भारत परमाणु शस्त्र बनायें

चीन और पाकिस्तान के संयुक्त खतरे से निबटने की तैयारी के लिए भारत को परमाणु शस्त्र बनाने चाहिए। परमाणु बम बनाना हमारे जैसे गरीब देश के लिए बहुत खर्चीला पड़ेगा कहने वालों को उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि देश की रक्षा के लिए जो भी मूल्य चुकाना पड़े कम ही होगा।

सेना में भर्तियों पर जोर देते हुए श्री उपाध्याय ने कहा कि सेना की क्षमता 20लाख तक बढ़ाई जानी चाहिए, बीस वर्ष के आयु वर्ग के लोगों को और भी भर्ती किया जाना चाहिए और आंतरिक सुरक्षा बलों को भी मजबूत किया जाना चाहिए। सीमा के क्षेत्रों में पुलिस का काम केंद्र के अधीन होना चाहिए और इसके लिए अलग सीमा सुरक्षा पुलिस का गठन होना चाहिए। जिन तत्वों की देश के प्रति निष्ठा संदेहास्पद हो वैसे सभी तत्वों को सीमा से कम से कम 1 मील दूर रखा जाना चाहिए।

6.चीन और पाकिस्तान के प्रति जनसंघ की दृष्टि

भारतीय जनसंघ का मत इस विषय में पूर्णः स्पष्ट है कि उसका कहना है कि चीन और पाकिस्तान दोनों के आक्रमण समाप्त होने चाहिए। उसने सीमा सुरक्षा को सर्वाधिक महत्व दिया है। जनसंघ भारत के प्रत्येक इंच भूभाग की अक्षरशरू मुक्ति का समर्थक है। उसके घोषणा पत्र में कहा गया है कि भारत की सीमाओं का अतिक्रमण हुआ है। एक और पाकिस्तान ने तो दूसरी ओर चीन ने हमारे देश में काफी बड़े क्षेत्र को अपने कब्जे में कर लिया है। राष्ट्र द्वारा आक्रमण का सफल प्रतिकार करने की क्षमता के बावजूद ढुलमुल नीति के फलस्वरूप कांग्रेस सरकार ने देश का मनोबल क्षीण किया है और शत्रु को अपनी स्थिति सुदृढ़ करने का मौका प्रदान किया है। भारतीय जनसंघ देश की स्वतंत्रता और सार्वभोमिकता को दी गई इस चुनौती का मुकाबला करेगा और भारत के प्रत्येक इंच भूभाग को मुक्त कराएगा।

कश्मीर के संबंध में अपने प्रतिज्ञा को उसने निम्न शब्दों में दोहराया है भारतीय जनसंघ कश्मीर पर किये गए

आक्रमण को भारत पर आक्रमण समझता है और इस कारण पाकिस्तान और चीन के कब्जे में पड़े भू– भाग को मुक्त कराने के लिए वह प्रत्येक उपाय का सहारा लेगा।

7.भारतीय क्षेत्र खाली किए बिना कोई संधि वार्ता ना हो तथा सुरक्षा के प्रश्न पर राष्ट्रवादी शक्तियां संगठित हो

दीनदयाल जी कहा कि चीनी आक्रमण के संबंध में प्रधानमंत्री की भाषा में जो थोड़ा कड़ापन आया है, उससे जनता में तब तक भरोसा और उत्साह उत्पन्न नहीं हो सकता, जब तक उसके साथ चीनी आक्रामकों को भारतीय सीमा से बाहर धकेलने के लिए दृढ और प्रभावी कार्रवाई न की जाए। जिस भांति अब तक वह चीनियों द्वारा बनाए गए क्षेत्रों के उजड़े होने तथा सेनाओं के वहां आने–जाने की कठिनाई आदि का उल्लेख करते रहे हैं, उससे केवल यह प्रकट होता रहा है कि वह स्वयं इस बात के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं है कि हर मूल्य पर देश की अखंडता की रक्षा की जाए। जहां यह बातें देश की मनोभावनाओं से पूर्ण और बेमेल है, दूसरी ओर इनसे चीनी आक्रमण को प्रोत्साहन

और स्वयं अपने में हतोत्साह और देश की रक्षा के लिए शासन की इच्छा तथा क्षमता के संबंध में विश्वास उत्पन्न हुआ है। अब भारत–चीन संबंध का प्रश्न प्रमुख और सामरिक हो गया है। अतः अब जबकि भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराने के लिए चीन के साथ वार्ता किए जाने की चर्चा उस समय तक के लिए बंद कर देनी चाहिए, जब तक की अधिकृत क्षेत्र मुक्त नहीं हो जाता। चीन के साथ दौत्य संबंध (trategic relationship) भी विच्छेद कर देने चाहिए।

8. कम्युनिस्ट सेना में फूट फैलाने का देशद्रोही प्रयास ना करें

साम्यवादियों द्वारा सेना की निष्ठा की आलोचना करने पर दीनदयाल जी ने बताया कि सुरक्षा सेवाओं की निष्ठा को चुनौती देना अथवा उनके बारे में भ्रम फैलाना राष्ट्र के साथ अपघात (Degeneracy शारीरिक, मानसिक व नैतिक गुणों से पतित होना) है। हमारी सेनाओं ने प्रत्येक अवसर पर योग्य आचरण किया है, उनका इतिहास प्रशंसनीय और गर्व करने योग्य है। विद्रोह की भावना का अस्तित्व न होते

हुए भी उसे उन पर लादना बड़ी कृतघ्नता है। यदि कोई उनके बारे में इस प्रकार सोचता है तो उसका एक ही अर्थ है कि कुछ ना कुछ काला उसके मन में है।

कम्युनिस्ट देश में सैनिक क्रांति की संभावनाओं को व्यक्त करते हैं, वे बिना सोचे समझे विदेशी सांचों को भारतीय परिस्थिति पर लादना चाहते हैं। किंतु यह ध्यान में रखना चाहिए कि कम्युनिस्ट कार्यप्रणाली में ऐसे पगों को अस्वीकार नहीं किया गया है। यदि आज कम्युनिस्ट किसी सैनिक कांति की संभावना की चर्चा कर रहे हैं तो संभवतरू उसके पीछे उनके अपने इरादों को छिपाने अपनी योजनाओं की असफलता से उत्पन्न निराशा का भाव विद्यमान हो सकता है। यदि यह सब आरोप सत्य हैं, तो सेनापति को बधाई मिलनी चाहिए न की उनकी भर्त्सना की जानी चाहिए। उन्होंने सेना के गैर राजनीतिक स्वरूप की रक्षा करने का सराहनीय प्रयास किया है।

9. शत्रुओं व मित्रों की पहचान करना सीखे कांग्रेस

एक बार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ओर से जारी परिपत्र में सरकारी नीतियों की आलोचना करने के लिए विपक्षी पार्टियों और विशेष रूप से भारतीय जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी को देशद्रोही तक करार दिया गया यद्यपि कम्युनिस्टों को 100 प्रतिशत राष्ट्रवादी बताकर, होने का प्रमाण पत्र दिया जबकि जनसंघ व स्वतंत्र पार्टी को देशद्रोही घोषित किया गया।

दीनदयाल जी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के पास कुछ अनोखे मानदंड है हम यही कह सकते हैं कि हमारी सिर्फ भारत माता के प्रति संपूर्ण और एकनिष्ट निष्ठा है, इसके अतिरिक्त अन्य किसी के प्रति हमारी निष्ठा नहीं है। यदि हमने कोई अपराध किया है कि हम कई वर्षों से वे बातें कह रहे हैं जो प्रधानमंत्री और कांग्रेस के नेता आज कह रहे हैं। उन्होंने कहा की मित्र चेतावनी देता है तथा शत्रु आक्रमण करता है। मातृभूमि के प्रति निष्काम समर्पण की

इस महानतम भावना से हमें स्वयं को स्वतंत्रता की रक्षा में समर्पित कर देना चाहिए।

10.प्रत्येक राजनीतिक दल द्वारा राष्ट्र की सुरक्षा के प्रश्न को सर्वोपरि महत्व दिया जाए––

बाह्य आक्रमण अथवा अन्य कोई आंतरिक संकट किसी भी राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए संकट का कारण बन सकता है। इसी प्रकार यदि कोई देश आर्थिक दृष्टि से जर्जर हुआ तो वह शीघ्र ही बाह्य आक्रमण का शिकार बन बैठता है। लेकिन बाह्य आक्रमण के फलस्वरूप राष्ट्र भावना की उग्र भावना भी उत्पन्न हुई है इसलिए उसे संकट के समय का वरदान भी कहा जाता है। अंग्रेजी की एक कहावत के अनुसार के ऐसे राष्ट्र के विषय में यह कहा गया है कि वह युद्धकाल में तो जीवित रहता है परंतु शांति का समय उसके लिए मृत्यु का द्वार है।

फिर भी इस तर्क के आधार पर कोई युद्ध की कल्पना अथवा कोई योजना नहीं कर सकता। लेकिन प्रत्येक राष्ट्र को आत्मरक्षार्थ सैनिक एवं मानसिक दृष्टि से सदैव सिद्ध रहना आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना कोई भी राष्ट्र संसार में अपनी स्वतंत्रता को अधिक दिन तक टिकाकर नहीं रख सकता। इतना ही नहीं, एक राष्ट्र को बाह्य आक्रमण से आत्मरक्षा करने की तैयारी के अतिरिक्त देश में विद्यमान विघटन एवं पृथकतावादी तत्वों का सामना करने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए। पर यदि देश में कोई ऐसा राजनीतिक दल है, जो राष्ट्र की एकता और अखंडता की ओर से उदासीन है तो उसके द्वारा न तो विघटनकारी तत्वों का सामना करना ही संभव है और न हीं वह शत्रु का प्रतिकार कर सकता है। वास्तव में ऐसा दल, सुरक्षा की ओर से इस प्रकार उदासीन हो तो वह राष्ट्र के अस्तित्व को बनाए रखने में सफल नहीं हो सकता।

11.जनसंघ की चेतावनी – इन सब राजनीतिक दलों से भिन्न जनसंघ ही उस समय एक ऐसा दल था जो चीन की ओर से सशंकित था और जिसने पाकिस्तान की शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियों का उल्लेख करने के पश्चात सन 1951 के अपने चुनाव घोषणा–पत्र में लिखा था कि भारत का उत्तरी सीमांत भी सुरक्षित नहीं है। भारत के शांतिपूर्ण दृष्टिकोण की उपेक्षा करते हुए चीन ने तिब्बत की स्वाधीनता नष्ट कर उसे गुलाम बना लिया है, जो सह–अस्तित्व की नीति के विरुद्ध है। नेपाल से संधि करते समय भी चीन ने भारत की विशेष स्थिति को ध्यान में नहीं रखा। इसी प्रकार चीन के नक्शों पर भारतीय क्षेत्र को दिखाना, जिसे गलती से दिखाया गया बताया गया था, वहां चीनी सेनाओं के प्रवेश (जिसका कारण गलतफहमी बताया गया था) और दक्षिण पूर्वी एशिया के छोटे–छोटे देशों में चीनियों की जो गतिविधियां चल रही है, उनकी ओर से भारत को सतर्क रहना चाहिए। इससे स्पष्ट है कि जनसंघ ने चीनियों को समझने में उसमें भी कोई गलती नहीं की थी।

12.सुरक्षा के संबंध में जनसंघ दीनदयाल जी के सुझाव–

1957 में जनसंघ को छोड़कर अन्य सभी राजनीतिक दल देश की सुरक्षा की ओर से उदासीन थे और राजनीतिक व आर्थिक कार्यक्रमों को ही वे महत्व दे रहे थे। लेकिन जनसंघ ने उस समय सुरक्षा के प्रश्न को सर्वोपरि महत्व का प्रश्न बताया था और उसके लिए अपने सुझाव देते हुए उसने कहा था कि देश की सेना को बढ़ाने, उनमें राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने के साथ ही उन्हें आधुनिकतम शस्त्रों से सुसज्जित करना चाहिए। युवकों के लिए अनिवार्य सैनिक शिक्षा दिए जाने का भी जनसंघ ने सुझाव दिया था। यह जानते हुए कि राज्य सरकारें सीमांत क्षेत्र की उचित सुरक्षा व्यवस्था नहीं कर सकती, केंद्र के अधीन एक सीमान्त पुलिस इस्टैब्लिशमेंट स्थापित करने का सुझाव भी जनसंघ ने दिया था। यदि सीमांत निरीक्षण एवं सुरक्षा का यह कार्य केंद्र ने पहले से ही अपने हाथ में लिया होता तो अक्साई

चीन में चीनियों की घुसने के समाचार का ज्ञान सरकार को काफी दिनों पूर्व ही हो जाता।

आज जबकि हमारी सीमाएं असुरक्षित हैं और आक्रमण जारी है तब राष्ट्र की सुरक्षा के प्रश्न पर कोई भी मौन नहीं रह सकता पर यह दुरूख की बात है कि विभिन्न राजनीतिक दलों ने इस प्रश्न को अपने चुनाव घोषणापत्र में अधिक महत्व नहीं दिया है।

13.राष्ट्र की सुरक्षा की दृष्टि से हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए

1.अपनी सीमाओं की सुरक्षा करने के साथ हम यह भी देखें कि यहां पंचमांगी तत्व(देशद्रोही) न रहने पाए और न कोई अनाधिकृत व्यक्ति उक्त क्षेत्र में प्रवेश कर सके।

2. दूसरे हमें अपने भू–भाग को मुक्त कराना चाहिए और

3. तीसरे देश की रक्षा व्यवस्था में वृद्धि कर सभी असुविधाओं का हल शीघ्रता शीघ्र ढूंढ निकालना चाहिए।

4. केंद्र को सीमांत क्षेत्र की रक्षा के लिए एक विशेष पुलिस बल प्रस्थापित करने के साथ ही तस्कर व्यापार रोकने और अनुचित घुसपैठ को रोकने का भी प्रबंध करना चाहिए।

5.भारत के गुप्तचर विभाग का आधुनिकीकरण करते हुए विदेशी गुप्तचरों और पंचमांगियो (देशद्रोहियों) की कार्यवाइयों को उनकी हरकतें बढ़ने से पूर्व ही रोकने का उपाय करना चाहिए।

6.असम और कश्मीर में अनाधिकृत रूप से आए पाकिस्तानियों को तुरंत देश से बाहर निकाल देना चाहिए।

7. सीमांत क्षेत्र को विशेष बल देते हुए जनसंघ ने अपने चुनाव घोषणापत्र में कहा कि सीमांत क्षेत्र के विकास के लिए विशेष प्रयत्न किए जाएंगे। इस दृष्टि से योजना बनाकर विशेष धन उपलब्ध कराया जाएगा और जहां आवश्यक होगा उनका कार्यान्वयन सुरक्षा विभाग द्वारा कराया जाएगा द्य यातायात के साधनों का विकास करने के

साथ ही इन क्षेत्रों के आर्थिक विकास की भी आवश्यक कार्यवाही की जाएगी।

8.राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के गठन का सुझाव

जहां तक सैन्य सेवाओं के संगठन का प्रश्न है कम्युनिस्ट एवं कांग्रेस दोनों पूर्णतरू चुप है द्य जन संघ राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद (नेशनल डिफेंस काउंसिल) की स्थापना का समर्थक है। हमारा मत है कि सेनाओं में घुसे राजनीतिक प्रभाव को जिससे सेना में कमजोरी आती है, समाप्त करना चाहिए और सेनाओं को योग्य रीति से सुसज्जित कर सेना के पुराने कर्मचारियों की कठिनाइयों को हल किया जाना चाहिए।

9.जनसंघ प्रादेशिक सेना और एनसीसी के विस्तार की समर्थक है

10 .सुरक्षा योजना पंचवर्षीय योजना का अंग बने

जनसंघ प्रादेशिक सेना और एनसीसी के विस्तार की समर्थक है। जनसंघ पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत एक सुरक्षा

योजना की भी आवश्यकता अनुभव करता है, क्योंकि किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति उस देश की रक्षा क्षमता से जुड़ी रहती है। हम उनको पृथक रीति से नहीं देख सकतेद्य सैनिक विषयों में हम चीन और पाकिस्तान के मुकाबले संतुलन स्थापित करना चाहते हैं। सेनाओं को आधुनिकतम शस्त्रों से सुसज्जित करना चाहिएद्य प्रक्षेपास्त्र, पनडुब्बियां, युद्धक विमान आदि का निर्माण अथवा उन्हें किसी भी शक्ति गुट मैं सम्मिलित हुए बिना उपलब्ध करना हमारा अभीष्ट है।

11 .सुरक्षा का नारा सुरक्षा की दृष्टि से हमारा नारा होना चाहिए राष्ट्र का सैनिकी कारण और सेना का आधुनिकीकरण करो। इसी भांति सीमाओं के विषय में हमारी नीति उनकी रक्षा की होनी चाहिए, न कि वार्ता और विवाद की और यदि आक्रमण किया जाता है तो आक्रामको को खदेड़ देना चाहिए न कि उनके प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाई जाए। हमें आज योद्धा चाहिए, केवल विरोध करने वाले नहींद्य देश की अखंडता उन लोगों के द्वारा सुरक्षित

नहीं रह सकती जो केवल बैठकर हिसाब जोड़ते हैं शक्ति के साथ करने की क्षमता नहीं है वही कर सकते हैं श्रद्धा आत्म गौरव का भाव है मातृभूमि के लिए सर्वस्व की बलि चढ़ा देने का संकल्प रखते हैं।

दीन दयाल जी के सुरक्षा सम्बन्धी विचारों पर अटल एवं मोदी सरकार ने क्या किया इस पर अंत में प्रकाश डाला जा सकता है।

मुझे इस समारोह में बुलाया इसके लिए आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।